॥ श्रीजिनेन्द्रायनमः ॥

न्यामत विलास-अंक ८

राजल भजन एकादशी

१

चाल—सुन चीर हरण की कथा शाम् रसभरी मनोहर प्यारी ॥

सुन नेम कुंमर की क़था, भरी वैराग्य मनोहर प्यारी ॥ टेक ॥
छप्पन कोड़ चढ़े जादोवंसी, एकसे एक अधिकाई ।
बल कृष्णमुरारी सब राजा मिल, खूब बरात बनाई ॥
नर नारी सुन्दर चतुर वेष सज जिन, देखन को आई ।
अरी तीन छत्र सिर फिरें नेम के, चौंसठ चँमर दुराई ॥
इस तरह से ब्याह रचाया, सुरपति ने नृत्य कराया ।
सुन मारग पशु किलकार, प्रभुने दया चित्तधारी ॥ १ ॥
कर कंगण तोड़ा मुकट, मोड़ उल्टाही रत्थ फिराया ।
पशुवों के बंधन तोड़दिये, दुनिया से चित्त हटाया ॥

राजल सी सुन्दरि तजकर, शिव बनिता से नेह लगाया।
तज जूनागढ़ जा गिरनारी पर, निश्चल ध्यान लगाया ॥
राजल को खड़ी छिटकाई, नव भव की प्रीति गँवाई।
मुरारण की लाज नहीं आई, अब कहा करूं मोरी माई ॥
देखो शिव रमणी का नाथ लिहे, बैराग कि कौन बिचारी २
कहैं उग्रसैन सुन राजल बेटी, मैं तोहे समुझाऊँ।
जानेदे नेम गया तो तुझे मैं, और सुघड़ बर लाऊँ॥
कहे राजल नेम बिना मैं दूसरा, और नहीं बरपाऊँ।
जानेदो मोहे गिरनार ऐसे, जीने के आग लगाऊँ।
जग सम्पति मेरु समाना, हम तृण समान कर माना।
समता से नेह लगाना, दीक्षापद मनमें आना ॥
मैं लूं शिवमारग न्यामत, जिन चरणन में शीस नमा री ॥ ३ ॥

२

चाल—इंद्र सभा ॥ घरसे यहां कौन खुदा के लिये लाया मुझको ॥

रो के राजल ने कहा मात सुनो बात मेरी।
मैं नहीं मानूंगी गिरनार मुझे जानेदो ॥ १ ॥
अब मुझे ब्याह की इच्छा नहीं छोड़ा घर बार।
मैं नहीं मानूंगी बस हट न करो जाने दो ॥ ॥ २ ॥
तज के बालम ने मुझे ध्यान लगाया गिरपर।
वक्त जाता है चला मुझको चली जाने दो ॥ ३ ॥
बैन पशुवन के सुने राह में कंगन तोड़ा।

तारलो गहना में लूं जोग मुझे जानेदो ॥ ४
हे प्रभु सुनिये कि न्यामत की है अरदास यही ।
शीस चरणों में धरूं चरण परस जाने दो ॥ ५ ॥

३

चाल—मंदिर में खड़े दर्शन के लिये ॥

मुझे देके दगा गिरनार गएरी ॥ टेक ॥
तोरण पै नेमी चढ़ आये, संग कृष्ण मुरार गएरी ॥ १ ॥
पशुवन बैन सुने मारग में, मनमें दया विचार गएरी ॥ २ ॥
तोड़ दिये दुखियों के बंधन, दीक्षा छिन में धार गएरी ॥ ३ ॥
मोर मुकट कर कंगण तोड़े, तजकर राजल नार गएरी ॥ ४ ॥
नव भव की मोरी प्रीत लगी थी, छिन में हम से विगाड़ गएरी ५
एक न मानी बालम मेरे, सब समझावत हार गएरी ॥ ६ ॥
लोकांतिक की सुनकर बतियां, मुक्ती के मारग सिधार गएरी ७
ले माता आभूषण तेरे, पति संग मेरे शृङ्गार गएरी ॥ ८ ॥
जाती हूं गिरनारी मैं भी, जहाँ जिन नेम कुमार गएरी ॥ ९ ॥
मोहे छोड़ा जग बिपता में, आपन जनम सुधार गएरी ॥ १० ॥
न्यामत उस मारग को चलिये, जहाँ राजल भरतार गएरी ॥ ११

४

चाल—चरणों में जी म्हारी लागी लगन ॥

कोई लावो समझाकर मेरे सजन, मेरे सजन अरी मेरे सजन । टेक
सुन पशु बैन दया चितलाए, तोड़ गए करके कंगण ॥ १ ॥

जा गिरनारी दीक्षालूंगी, ले माता तेरे आभूषण ॥ २ ॥
न्यामत ऐसे जिन को नमिये, होवे कर्म भरम का हरण ॥३॥

५

चाल—तोरी बालों सी उमर तिरछे नैना ॥

थारी बाली सी उमर भये ब्रह्मचारी।
ब्रह्मचारी तप बृत धारी, थारी बाली सी उमर भये ब्रह्मचारी ॥टेक

काहे तजी प्रभु राज संपदा,
क्यों तज गए राजल नारी ॥ १ ॥
नव भव तो अपने संग राखी,
दशवें क्यों करदई न्यारी ॥ २ ॥
जोग लेन का अवसर नाहीं,
एती अर्ज सुनो म्हारी ॥ ३॥
लाख कही मोरी एक न मानी,
चढ़ गिर जिन दीक्षा धारी ॥ ४ ॥
अब मुझको भी दीक्षा दीजै,
तुम जीते अरु मैं हारी ॥ ५ ॥
न्यामत तुमरे नितगुण गावे,
चरण कमल पर बलिहारी ॥ ६ ॥

६

चाल—नैना कसूंबी कसूंवी कसूंवी रंग हो रहे पिया आर
आधी रात नैना कसूंवी रंग होरहे ॥

अरी भैनां वह त्यागी वैरागी शिवरागी रंग होरहे।

मैं भी जाऊं गिरनार भैनां वह त्यागी रंग होरहे ॥ टेक ॥
अरी एकतो वह राजा वह राजा वह राजा के बेटे।
लियो जिन अवतार ॥ भैनां० ॥ १ ॥
अरी एकतो म सती मैं सती सती कहलाऊं सती कहलाऊं।
रही नवभवलार ॥ भैनां० ॥ २ ॥
अरी तोड़ो यह कंगण हमारे करका हमारे करका।
गल मोतियनहार ॥ भैनां० ॥ ३ ॥
अरी किसकी है माता मात पितु भाई, मात पितु भाई।
सारा झूठा संसार ॥ भैनां० ॥ ४ ॥
अरे न्यामत चलो गिरनारी चलो गिरनारी।
लोना अणुव्रत धार। भैनां०। ५।

७

(चाल— मूंगा मुझे लेदे ना गरदन मूंगा वाली वे मूंगा मैनू लेदे ना ॥)

श्रीनेम चले गिरनार मैं कैसे जाने दूंगी।
हाँ हाँ मैं कैसे जाने दूंगी ॥
तजकर सोलह शृङ्गार मैं जिन दीक्षालूंगी।
हाँ हाँ मैं जिन दीक्षा लूंगी ॥ टेक ॥
मेरा तारो हार शृंगार यह कर कंगण तोड़ो।
गलगज मोतियन का हार मैं दाना दाना करदूंगी ॥ १ ॥
मेरा करो अर्जिका वेष कि गिरनारी जाऊं।
कोई सखी सहेली लार मैं अपने नहीं लूंगी ॥ २ ॥

मेरा काहे सुहाग रचावो मुतियन माँग भरो।
मैं करूं केश का लोच जोग दरशा दूंगी॥
न्यामत तजदे संसार है सब झूठा नाता।
कोई नदी नाव संजोग मैं भरम मिटा दूंगी॥ ४॥

८

(॥ चाल—बिंदी लेदे लेदे लेदे मेरे माथे का शृङ्गार ॥)

अब तारो तारो तारो मेरे माथे का शृङ्गार।
माथेका शृङ्गार मेरे हाथोंका शृङ्गार॥
अब तारो तारो तारो मेरे माथे का शृङ्गार॥ टेक॥
अरी तारो बिंदी बैना बेसर मोतियन हार।
मन मोहन माला ना चहिये मैं छोड़ा घर बार॥ १॥
ले माता दखनी चीर मुझे क्या करना है शृङ्गार।
मुझे देदे साड़ी स्वेत करूं जा बन में तप सार॥ २॥
मेरी मतना माँग भराइयो सुनलो सब परिवार।
मैं सती शिरोमणि लागे मेरे शील को यह गार॥ ३॥
मेरे बालम ने पशुवन की बन में सुनकर पुकार।
जग तजा मुझे बतलागए सब झूठा है संसार॥ ४॥
अब करो आर्जिका वेष मेरा क्या करना है बिचार।
मैं मान लिए सब भ्रात पिता सम जगत मँझार॥ ५॥
मत सूते कर्म जगावो न्यामत महा दुख कार।
मुझे दो आज्ञा तप करूं धरूं अणुव्रत इकचार॥ ६॥

९

(॥ चाल नाटक—तू है बड़ा बदकाररे तोहि नाहीं ख़बररे ॥ तूहै ॥)

तूहै निपट नादानरी तोहि नाहीं खबर तोहि नाहीं खबररी तूहै०टेक

सारे पुरजन पर है तन धन, प्यारी है झूठा संसाररी ॥ तूहै० ॥१॥

समझ ज़रा मनमें अरी राजुल, तज जगका व्यवहाररी । तूहै०।२

न्यामत भव भव में दुख पायो, अब अनुभव चितधाररी । तूहै०३

१०

(॥ चाल नाटक—पिया आप ना अरी हमसे सहा दुख जायना ॥)

तुम जावोना अरी जाके नेमी को मनावोना ।

मैं मना के सुझा के सुना के थकी, तुम जावोना० ॥ टेक ॥

कैसे सरदी को सहेंगे वह परी घह बन में ।

लूएं गरमी की भी आकर के लगेंगी तन में ॥

बिजलियाँ कड़केंगी बरसात में काले घन में ।

न्यायमत सोचलो तब गुज़रेगी क्या क्या मन में ॥

कह सुनावो ना, बन जावो ना, घर आवो ना ॥ अरी जाके०।१।

११

(॥ चाल नाटक—अम्माँ मुझे दिल्ली की टोपी मँगादे ॥)

अम्माँ मुझे चलकर के दीक्षा दिलादे ।

दीक्षा दिलादे, दीक्षा दिलादे, हाँरी मुझे मुक्ती के मारग
लगादे ॥ अम्माँ० ॥ टेक ॥

कंगण को तोड़ो, बेसर को मोड़ो ।

हाँरी मुझे बैराग्य साड़ी रँगादे ॥ अम्माँ० ॥ १ ॥
बस जग का नाता, झूठा है माता ।
मुझे तो गिरनारी का रस्ता बतादे ॥ अम्माँ० ॥ २ ॥
न्यामत निहारो, दिलमें बिचारो ।
बेगी जिन चरणों में जीया लगादे ॥ अम्माँ० ॥ ३ ॥

॥ इति श्री राजल भजन एकादशी समाप्तम् ॥

नोटिस

निम्न लिखित भाषा छंद बद्ध चरित्र प्राचीन जैन पंडितोंने रचेथे जिनको अब संशोधन करके मोटे कागज़ पर मोटे अक्षरों में सर्व साधारणके हितार्थ छपवाया है सब भाइयोंको पढ़कर धर्म लाभ उठाना चाहिये-यह दोनो जैन शास्त्र स्त्री पुरुषोंके लिये बड़े उपयोगी हैं, इनकी कविता प्राचीन है और सुन्दर हैं॥ दोनो शास्त्र जैन मंदिरों में पढ़ने योग्य हैं:—

(१) भविसदत्त चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित बनवारी लालजी जैनने सम्वत् १६६६ में कविता रूप चौपाई आदि भाषा में बनाया था जिसको कई प्रतियों द्वारा मिलान करके शुद्धता पूर्वक छपवाया है और कठिन शब्दोंका अर्थ भी प्रत्येक सफे के नीचे लिखा गया है इसमें महाराज भविसदत्त और सती कमलश्री व तिलकासुन्दरी का पवित्र चरित्र भले प्रकार दर्शाया गया है। सजिल्द मूल्य २)

(२) धन कुमार चरित्रः—यह जैन शास्त्र श्रीमान् पंडित खुशहाल चन्द जी जैन ने कविता रूप चौपाई आदि भाषा में रचा था इसको भी भले प्रकार संशोधन करके छपवाया है इसमें श्रीमान् धनकुमार जी का जीवन चरित्र अच्छी तरह दिखाया गया है। सजिल्द मूल्य १।)

(३) नमोंकार मंत्रः—फूलदार बढ़िया मोटा कागज़ मू०)

पुस्तक मिलनेका पताः—

बा० न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टिक्ट बोर्ड हिसार।

मु० हिसार (जिला खास हिसार)

(पंजाब)

(नोटिस)

न्यामतसिंह रचित जैन ग्रन्थमाला के वह अंक जिनके सामने मूल्य लिखा गया है छप कर तय्यार हैं—बाक़ी अंक भी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं:—

		नागरी	उर्दू
१ जिनेन्द्र भजन माला	...	।-)	०
२ जैन भजन रत्नावली	...	।)	०
३ मूर्ति मंडन प्रकाश (जैन भजन पुष्पांजली)	...	।)	०
४ जिनेन्द्र पूजा	...	=)	०
५ कर्ता खंडन प्रकाश (ईश्वर स्वरूप दर्पण)	...	॥)	०
६ भविसदत्त तिलकासुन्दरी नाटक	...	१॥)	॥)
७ जैन भजन मुक्तावली	...	।)	०
८ राजेन्द्र भजन एकादशी	...	-)	०
९ स्त्री गान जैन भजन पचीसी	...	=)	०
१० कलियुग लीला भजनावली	...	=)	-)॥
११ कुन्ती नाटक	...	=)	०
१२ चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	...	॥।)	।=)
१३ अनाथ रुदन	...	-)।	०
१४			
१५			
१६			
१७			
१८ जैन भजन शतक	...	।=)	०
१९ थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी	...	≡)	=)
२० मैनासुन्दरी नाटक (बढ़िया मोटे काग़ज़ मोटे अक्षर छटी अडीशन)	...	२॥)	०

पुस्तक मिलने का पता—

न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मु० हिसार (पंजाब)

Niamat Singh Jain,

Secretary District Board, HISSAR (Punjab)